



लोक सभा सचिवालय  
प्रेस एवं जन सम्पर्क स्कंध  
संसद भवन, नई दिल्ली  
**LOK SABHA SECRETARIAT**  
Press and Public Relations Wing  
Parliament House, New Delhi

## प्रेस विज्ञापित PRESS RELEASE

**“क्षमा व्यक्ति और समाज में अहंकार की भावना को समाप्त करने का साधन है”:** लोक सभा अध्यक्ष

नई दिल्ली, 6 सितम्बर 2020 : लोक सभा अध्यक्ष, श्री ओम बिरला आज भारतवर्षीय दिगंबर जैन धर्म संरक्षणी महासभा द्वारा आयोजित सामूहिक क्षमावाणी पर्व में वर्चुअल माध्यम से शामिल हुए ।

इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए श्री बिरला ने कहा कि महात्मा गांधी जी हमेशा कहा करते थे कि क्षमा करना सक्षम व्यक्ति की विशेषता है और आज का दिन क्षमावाणी के रूप में हम सबके लिए आत्म शुद्धि का दिन है । उन्होंने कहा कि क्षमा व्यक्ति और समाज में अहंकार की भावना को समाप्त करने का साधन है । इससे हमें सौहार्दपूर्ण जीवन जीने की शिक्षा मिलती है और यह मानवीय जीवन की आधारशिला है। क्षमा पर्व का यह दिन अहिंसा और मैत्री का प्रतीक है और अगर हमें सामाजिक सद्भावना को बढ़ाना है, तो हमें अपने जीवन में क्षमा को आत्मसात करना चाहिए । श्री बिरला ने यह भी कहा कि जैन धर्म हमेशा आत्म शुद्धि पर बल देता है और जैन दर्शन में क्षमा करने वाले और क्षमा मांगने वाले दोनों का महत्वपूर्ण स्थान है । समय की मांग है कि संपूर्ण मानवता को जैन समाज की इस विशेषता को अंगीकार करना चाहिए।

श्री बिरला ने यह भी कहा कि आधुनिक जीवन शैली में हमारे सामाजिक सरोकार कम होते जा रहे हैं । हम अपने में सिमट कर रह गए हैं और प्रकृति से दूर होते जा रहे हैं । यही कारण है कि लोग मानसिक और शारीरिक व्यथा से ग्रसित होते जा रहे हैं । ऐसे समय में भगवान महावीर की शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण है । आज जब संपूर्ण विश्व कोरोना महामारी से जूझ रहा है, ऐसे में भगवान महावीर के बताए गए मार्ग पर चलकर संपूर्ण समाज में संयम और त्याग की विचारधारा के साथ काम किया गया है । इस बात

का उल्लेख करते हुए कि क्षमा करना सबसे बड़ी पूंजी है और क्षमावाणी अलौकिक रूप से हम सबको निर्मल करने का काम भी करती है, श्री बिरला ने आग्रह किया कि सभी को भगवान महावीर के विचारों और आदर्शों को अपने जीवन में आत्मसात करना चाहिए । उन्होंने यह आशा व्यक्त की कि इस दिन सभी संतों से मिलने वाले मार्गदर्शन से बेहतर समाज का निर्माण होगा ।

इस बात का उल्लेख करते हुए कि भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है जो संविधान के मार्गदर्शन में कार्य करता है, श्री बिरला ने कहा कि वह क्षमा को संसद का आभूषण बनाने के प्रयास करेंगे । संसद में देश हित और जन कल्याण के मुद्दों पर वाद विवाद और तर्क वितर्क होता है । यह चर्चा और संवाद सार्थक होना चाहिए और सभी सांसदों को मिलकर सामूहिक रूप से देश हित में काम करना चाहिए । यदि सभी माननीय सांसद संसदीय परम्पराओं को ध्यान में रखते हुए कार्य करें तो देश की प्रगति होगी ।

श्री बिरला ने यह भी कहा कि जैन समाज के लोगों के मन और वचन में सब की सेवा का मूल भाव रहता है और यह समाज सामूहिक उत्थान और जनहित के कार्यों में हमेशा अग्रणी रहा है। जैन समुदाय ने राष्ट्र निर्माण और राष्ट्र सेवा में व्यापक योगदान दिया है । कोविड महामारी के दौरान भी उन्होंने भगवान महावीर द्वारा दिखाए गए धर्म, सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य और क्षमा के मार्ग पर चलते हुए समाज के वंचित लोगों की सेवा की है।

**“Forgiveness is the means to eliminate the feeling of egoism in the individual and society”:** Lok Sabha Speaker

**New Delhi, 6 September 2020:** Lok Sabha Speaker Shri Om Birla participated today in a programme on Collective Kshnavani Parv, through virtual medium, organized by the All India Digambar Jain Dharma Sanrakshni Mahasabha.

Speaking on the occasion, Shri Birla said that Mahatma Gandhi had always preached that forgiveness is a characteristic of a competent person and today is indeed a day of self-purification for all of us. He said that forgiveness is the means to eliminate the feeling of egoism in the individual and society, helps us to live a harmonious life and,

as such, is the cornerstone of human life. This day of Kshama Parv symbolizes non-violence and friendship among us and if we wish to increase social harmony, then we need to imbibe forgiveness in our lives. Shri Birla further remarked that Jainism always emphasizes on self-purification and both the forgiveness-seeker as well as the forgiver hold important place in its philosophy. It is vital that the entire humanity embraces this feeling in their inter-personal behavior.

Shri Birla also observed that our modern lifestyles have shrunked our social responsibilities and reduced us to ourselves, falling away from nature. This is the reason why people are suffering from mental and physical agony. In such times, the teachings of Lord Mahavira assume much relevance. Today when the entire world is grappling with the corona epidemic, the ideology of restraint and renunciation propagated by Him have guided us to work for providing relief to the affected sections of the society. Describing forgiveness as the greatest wealth that works to cleanse us spiritually, Shri Birla also exhorted the people to imbibe the thoughts and ideals of Lord Mahavira. He expressed the hope that the valuable guidance provided by all saints on this day will help to create a better society.

Observing that India is the largest democracy in the world that has adopted the Constitution as its guiding spirit, Shri Birla said that he will strive to make forgiveness as the Parliament's jewel. Parliament provides the forum of debates and discussions on issues of national interest and public welfare. As such, there is a vital need to have meaningful discussions and dialogue and all the Members of Parliament need to work collectively for it. If all the Members internalize the feelings of Parliamentary traditions, then it will certainly go a long way for the betterment of our country.

Shri Birla noted that the Jain community always keeps the ideal of collective service in their mind and deeds and have been at the forefront of works of collective upliftment and public interest in our society. They have made enormous contribution in nation building and always rendered valuable service to the country. Even during the Corona pandemic, they have served the underprivileged sections of our society in keeping with the ideals of Lord Mahavira who has given the message of truth, non-violence, celibacy and forgiveness to the entire humanity.